ख

क्रियात्मक

6. राग परिचय एवं बंदिशें
7. हिंदुस्तानी संगीत में वाद्य यंत्र
8. प्रमुख तालों के ठेके एवं लयकारी
9. संगीत के प्रमुख कलाकारों का परिचय व योगदान

© NCERT not to be republished

चित्र 6.1— हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की विदुषी पद्मजा चक्रवर्ती

not to be republished

6 राग परिचय एवं बंदिशें

राग बागेश्री

तीवर रिध कोमल गमनि मध्यम बादि बखानि।
खरज जहाँ संवादि है बागेसरी लखानि।।

–रागचन्द्रिकासार

राग परिचय

यह राग काफी थाट से उत्पन्न होता है अर्थात इसमें गांधार और निषाद स्वर कोमल हैं व शेष सब स्वर शुद्ध हैं। वादी मध्यम व संवादी षड्ज है। इसका गायन समय मध्य रात्रि मानते हैं। इसके आरोह में ऋषभ तथा पंचम वर्जित है। इस आधार पर इस राग की जाति औडव-संपूर्ण है। इस राग में पंचम स्वर का प्रयोग अवरोह में वक्र रूप से किया जाता है जो राग को सुमधुर बनाता है। हिंदुस्तानी संगीत में स्वर स्थानों पर स्वर संगतियों का कैसा-कैसा प्रभाव होता है, यह अनुभव से ही जाना जा सकता है। बागेश्री भी बहुत सौंदर्य संपन्न राग है, लेकिन स्वरों को विभिन्न तरह के समुदायों में लेने की प्रक्रिया आनी चाहिए।

मुख्य बिंदु

थाट	—	काफी
जाति	—	षाड्व संपूर्ण
स्वर	—	ग नि कोमल, शेष स्वर शुद्ध
वादी	—	म
संवादी	—	स
समय	—	मध्य रात्रि
आरोह	—	ऩि स ग म ध नि सं
अवरोह	—	सं नि ध म प ध म ग रे स
पकड़	—	ध़ ऩि स म, ध नि ध, म प ध मग, म ग रे, स
स्वर विस्तार	—	स ऩि ध़ ऩि स म ग रे स ऩि स ऩि ध़ म़ ध़ ऩि ध ऩि स ऩि ध़ म़ ध़ ऩि स। ग म ध नि ध म प ध म ग रे स। ध़ ऩि स म ग म ध नि सं नि ध म ग म ध नि सं, नि ध म प ध म ग, म ग रे स ऩि ध़ ऩि स। ग म ध नि सं, ध नि सं मं गं रें सं नि सं ध नि सं मं गं रें सं नि सं नि ध म ग ग म ध नि सं नि ध म प ध म ग म ग रे स ऩि ध़ ऩि स म ग रे स।

© NCERT not to be republished

राग बागेश्री

शब्द

ताल— एकताल
गायन शैली— विलंबित ख्याल

स्थायी— मोहे मनावन आए हो, सगरी रतियाँ किन सौतन घर जागे
अंतरा— तें तो रंगीले छबि दिखलाए लालन के मन ललचावे

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
धिं	धिं	धागे	तिरकिट	तू	ना	क	त्ता	धागे	तिरकिट	धी	ना
×		0		2		0		3		4	
स्थायी											
								ध सां	नि	धनि	प ,धध
								मो	ऽ	ऽऽ	,हेम
ध सां	–	नि	ध नि	ध	प ध	म	ग	ग म	ग	रे	सा
ना	ऽ	ऽ	व	न	आ	ऽ	ऽ	ऽ	ये	हो	ऽ
सा रे	सा	नि़	ध़	ध सा	सा	सा	–	सा नि़	सा	सा म	ग
स	ग	री	ऽ	र	ति	याँ	ऽ	कि	न	सौ	ऽ
म	ध	ध नि	प ध	म	ग	ग मग	रेसा				
त	न	घ	र	जा	ऽ	ऽऽ	गेऽ				
अंतरा											
								म ग	म	ध निध	सां ,नि
								तें	ऽ	तो ऽ	,रं
सां	-	सां	निसां	रें	मं गं	सां रें	सां	सां निसां	(सां)	नि	ध
गी	ऽ	ले	ऽऽ	छ	बि	दि	ख	लाऽ	ऽ	ये	ऽ
ध ग	म	नि ध	नि	सां	मंगं	रें	सां	सां रें	सां	नि	ध
ला	ऽ	ल	न	के	ऽऽ	म	न	ल	ल	चा	ऽ
ध म	नि ध	नि	प ध	म	ग	ग मग	रेसा				
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	वेऽ				

© NCERT not to be republished

राग बागेश्री– त्रिताल (मध्य लय)

शब्द

ताल— त्रिताल
गायन शैली— छोटा ख्याल
स्थायी— कौन गत भई ली मोरी रे पिया न पूछे एक हूँ बात
अंतरा— एक बन ढूँडी, सकल बन ढूँडी डार डार कर पात

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थायी															
धा	धिं	धिं	धा	धा	धिं	धिं	धा	धा	तिं	तिं	ता	ता	धिं	धिं	धा
×				2				0				3			
											ग म	ग	रे	–	सा
											कौ	न	ग	ऽ	त
रे	–	सा	–	नि	–	ध	–	सा	–	–	म	ध	–	पध	नि
भ	ऽ	ई	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ली	ऽ	ऽ	मो	ऽ	ऽ	रीऽ	ऽ
ध	–	–	–	म	–	–	–	ग	–	–	म ग	म	ध	–	नि
रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	पि	ऽ	या	ऽ	न
सां	–	–	–	नि	–	सां	–	सां	–	–	म	ध	नि	रें सां	–
पू	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	छे	ऽ	ऽ	ए	ऽ	क	हूँ	ऽ
नि	–	ध	–	म	–	प	ध	म ग	–	–	ग म				
बा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	त	ऽ	ऽ,	कौ				
अंतरा															
											म ग	म	ध	नि –	नि
											ए	क	ब	ऽ	न
सां	–	–	–	नि	–	सां	–	सां	–	–	सां	रें	गं	रें	सां
ढूं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	डी	ऽ	ऽ	स	क	ल	ब	न
सां नि	–	सां	–	नि	–	(सां)	–	नि	ध	–	नि ध	नि	सां	मं गं	–
ढूं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	डी	ऽ	ऽ	डा	ऽ	र	डा	ऽ
सां रें	–	सां	–	–	–	सां नि	सां	नि	ध	–	म	ध	नि	रें सां	–
ऽ	ऽ	र	ऽ	ऽ	ऽ	क	ऽ	र	ऽ	ऽ	क	ऽ	र	पा	ऽ
नि	–	ध	–	म	–	प	ध	म ग	–	ग –	म				
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	त	ऽ	ऽ,	कौ				

© NCERT not to be republished

राग बागेश्री– त्रिताल (मध्य लय)

शब्द

ताल— त्रिताल
गायन शैली— छोटा ख्याल

स्थायी— कौन करत तोरी बिनति पियरवा मानो न मानो हमरी बात

अंतरा— जब से गए मोरी सुधहु न लीनी चाहे सौतन के घर जागे

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
धा	धिं	धिं	धा	धा	धिं	धिं	धा	धा	तिं	तिं	ता	ता	धिं	धिं	धा
×				2				0				3			
स्थायी															
								ध सां	–	नि	नि	ध	म	प	ध
								कौ	ऽ	न	क	र	त	तो	री
म ग	ग	रे	सा	रे	रे	सा	–	–	ध सां	नि	नि	ध	म	प	ध
बि	न	ति	पि	य	र	वा	ऽ	ऽ	कौ	न	क	र	त	तो	री
म ग	ग	रे	सा	रे	रे	सा	–	–	ध नि़	–	ध़	नि़	सा	–	सा
बि	न	ति	पि	य	र	वा	ऽ	ऽ	मा	ऽ	नो	न	मा	ऽ	नो
म	ध	पध	नि	ध	म ग	–	रेसा								
ह	म	रीऽ	ऽ	ऽ	बा	ऽ	तऽ								
अंतरा															
								म ग	म	नि ध	नि	सां	–	सां	सां
								ज	ब	से	ग	ये	ऽ	मो	री
सां नि	सां	रें	सां	सां नि	सां	नि	ध	–	नि ध	–	ध	सां नि	–	ध	ध
सु	ध	हु	न	ली	ऽ	नी	ऽ	ऽ	चा	ऽ	हे	सौ	ऽ	त	न
म ग	–	ग –	म	ग	रे	–	सा	–	ध सां	नि	नि				
के	ऽ	ऽ	घ	र	जा	ऽ	त	ऽ	कौ	न	क				

© NCERT not to be republished

राग बागेश्री

ताल– तीनताल **गत – मसीतखानी**

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
धा	धिं	धिं	धा	धा	धिं	धिं	धा	धा	तिं	तिं	ता	ता	धिं	धिं	धा
×				2				0				3			
स्थायी															
											मग	रे	सस	(नि)ध़	नि़
											दिर	दा	दिर	दा	रा
स	म	म	गग	म	धनि	ध	म	(म)ग	रे	स					
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा					
माँझा															
म़	धध़	नि़	स	ग	मम	धनि	धम	(म)ग	रे	स					
दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा					
अंतरा															
											मम	ग	मम	ध	नि
											दिर	दा	दिर	दा	रा
सां	सां	सां	धनि	सां	मंगं	रें	सां	निसां	नि	ध					
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा					
											मंगं	रें	सांसां	नि	सां
											दिर	दा	दिर	दा	रा
म	धध	नि	सां	ग	मम	धनि	ध	(म)ग	रे	सा					
दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा					

© NCERT not to be republished

राग बागेश्री

ताल– तीनताल **गत– रज़ाखानी**

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
धा	धिं	धिं	धा	धा	धिं	धिं	धा	धा	तिं	तिं	ता	ता	धिं	धिं	धा
×				2				0				3			
स्थायी															
ध़	–ध़	नि़	स	–	–,	ग	–ग	म	ध	–	–,	ग	मम	ध	नि
दा	ऽर	दा	दा	ऽ	र,	दा	ऽर	दा,	दा	ऽ	र,	दा	दिर	दा	रा
सं	–	–,	नि	–	ध	म	–	सं	निनि	धध	मम	ग–	ग,रे	–रे,	स
दा	ऽ	र,	दा	ऽ	रा	दा	र	दा	दिर	दिर	दिर	दाऽ	र,दा	ऽर,	दा
अंतरा															
म	–	–,	ध	–	नि	सं	मं	गं–	गं,रें	–रें	सं	निरें	संसं	नि–	नि,ध
दा	ऽ	र,	दा	ऽ	रा	दा	रा	दाऽ	र,दा	ऽर,	दा	दाऽ	दिर	दाऽ	र,दा
–ध	म,	ग	मम	ध	नि	सं	–	नि	धध	मम	पध	म ग–	ग,रे	–रे,	स
ऽर	दा,	दा	दिर	दा	रा	दा	र	दा	दिर	दिर	दिर	दाऽ	र,दा	ऽर,	दा

© NCERT not to be republished

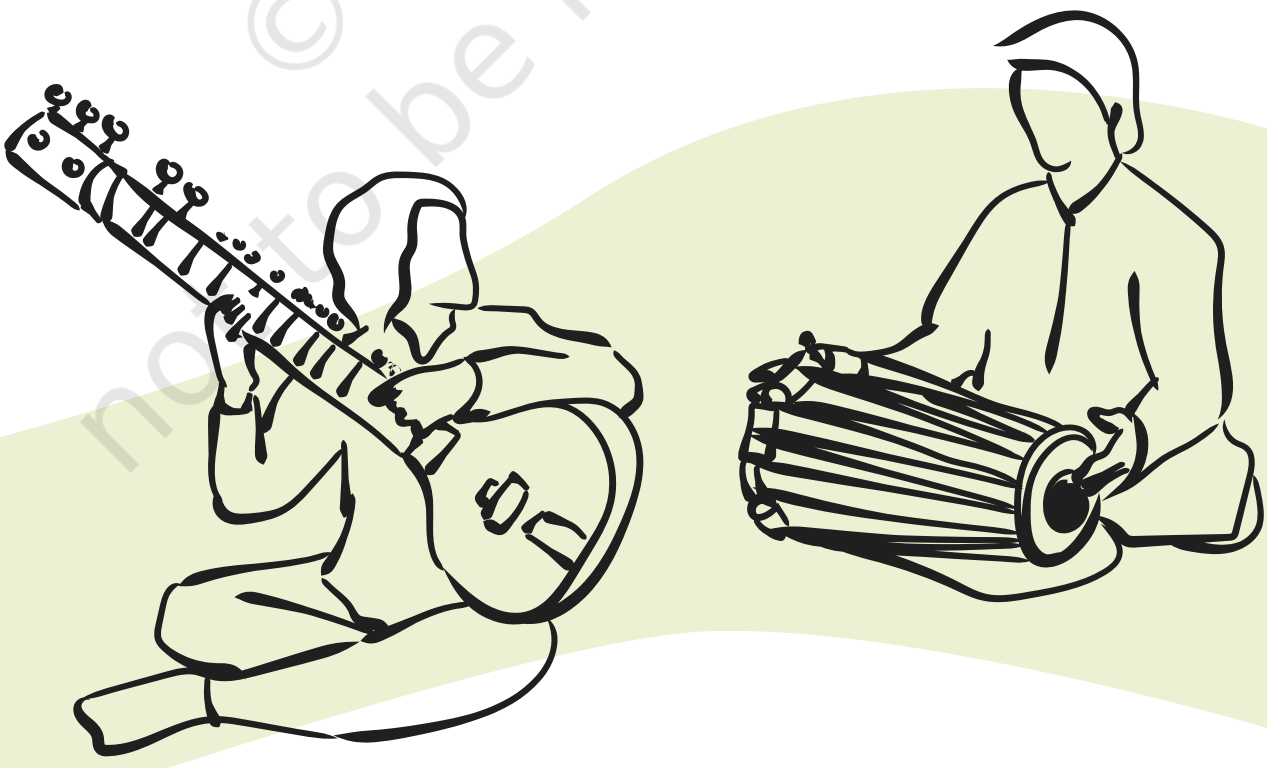

अभ्यास

इस राग के बारे में आप पढ़ चुके हैं। आइए, नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर देने का प्रयास करें–

1. राग बागेश्री किस थाट के अंतर्गत आता है?
2. राग बागेश्री का गायन समय बताइए।
3. क्या राग बागेश्री के आरोह में शुद्ध नि का प्रयोग होता है?
4. राग बागेश्री में पंचम का प्रयोग किस प्रकार किया जाता है?
5. राग बागेश्री पर आधारित कोई दो फिल्मी गीत लिखिए तथा उस गीत के कलाकारों के बारे में भी लिखिए।
6. *राग चन्द्रिकासार* में बागेश्री का विवरण किस तरह किया गया है, समझाइए।
7. राग बागेश्री पर आधारित किसी एक बंदिश की स्वरलिपि लिखिए।
8. ध नि स ग म ध नि ध में कोमल और शुद्ध स्वर रेखांकित कीजिए।

सही या गलत बताइए–

1. राग बागेश्री, आश्रय राग की श्रेणी में नहीं आता है। (सही/गलत)
2. इसके आरोह में निषाद वर्जित स्वर होता है। (सही/गलत)
3. इस राग की जाति षाड्व संपूर्ण होती है। (सही/गलत)
4. इस राग में पंचम स्वर वक्र लिया जाता है। (सही/गलत)
5. इसके आरोह तथा अवरोह में क्रमशः शुद्ध व कोमल निषाद प्रयोग होता है। (सही/गलत)

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. राग बागेश्री का वादी ..... तथा संवादी ..... होता है।
2. राग बागेश्री की जाति ..... होती है।
3. राग बागेश्री में पंचम ..... में लिया जाता है।
4. मोहे मना ..... ख्याल है।
5. कौन करत तोरी राग बागेश्री का ..... ख्याल है।

© NCERT not to be republished

सुमेलित कीजिए–

अ	आ
1. राग बागेश्री का थाट	(क) मध्य रात्रि
2. कोमल स्वर	(ख) नि स ग म ध नि सं
3. गायन समय	(ग) छोटा ख्याल
4. आरोह	(घ) ग नि
5. अवरोह	(ङ) काफी
6. कौन गत भई ली मोरी	(च) सां नि ध म प ध म ग रे सा

आइए, पाठ्यक्रम से हटकर कुछ भिन्न बातों पर भी चर्चा करें–

1. जो राग हम सीखते हैं व गाते हैं, उन रागों पर आधारित सुगम संगीत और फिल्मी संगीत आपको कैसा लगता है? विस्तृत जानकारी अपने शब्दों में लिखिए।
2. एक अच्छे संगीतज्ञ के लिए रियाज़ करना ज़रूरी है, क्यों? अपने शब्दों में लिखिए।
3. शास्त्रीय संगीत और फिल्म संगीत गाने की शैली कैसे अभिन्न है?

© NCERT not to be republished

राग आसावरी

ग ध नि स्वर कोमल रहे, आरोहन ग नि हानि।
ध ग वादी-संवादी से, आसावरी पहचान।।

राग परिचय— हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव

राग विवरण

राग आसावरी बहुत ही मधुर और लोकप्रिय राग है। यह आसावरी ठाठ से उत्पन्न होता है। इसमें गांधार, धैवत व निषाद स्वर कोमल लगते हैं और शेष स्वर शुद्ध हैं। इसका वादी स्वर धैवत और संवादी गांधार है। गायन समय दिन का दूसरा प्रहर है। आरोह में गांधार व निषाद वर्ज्य करते हैं और अवरोह संपूर्ण है, अत: इसकी जाति औड्व-संपूर्ण है। इस राग से मिलता-जुलता राग जौनपुरी है। इस राग के विशेष स्वर गांधार, पंचम व धैवत हैं।

मुख्य बिंदु

थाट — आसावरी
जाति — औड्व-संपूर्ण
स्वर — ग ध नि कोमल स्वर, शेष स्वर शुद्ध
वादी — ध
संवादी — ग
समय — दिन का दूसरा प्रहर
आरोह — सा रे म प ध, सां
अवरोह — सां नि ध प म ग रे सा
पकड़ — रे म प नि ध प, म प ध म प ग, रे स
स्वर विस्तार — स रे म, प ग रे, स रे नि स ध प, म प नि ध प, म प ध स, रे म प, ध ध प ध म प ग रे स। स रे म प ध ध प म म प ध ध सं, ध सं रें नि सं ध प म प नि ध प म प ग रे स रे म प। म प ध सं रें मं पं गं रें सं रें नि सं ध प, म प नि ध प म प ग रे स रे नि स ध प़ म प़ ध स

© NCERT not to be republished

आसावरी– त्रिताल (मध्य लय)

शब्द

ताल— त्रिताल (मध्य लय)

स्थायी— अँखिया लागी रहत निसदिन प्यारे तिहारे देखन काहि

गायन शैली— छोटा ख्याल

अंतरा— घरिपल छिन मोहे जुग सी बीतत निसदिन चटपटि लाग रहत महि

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
धा	धिं	धिं	धा	धा	धिं	धिं	धा	धा	तिं	तिं	ता	ता	धिं	धिं	धा
×				2				0				3			
स्थायी															
												(प)म	म	प	सां
												अँ	खि	याँ	ऽ
(नि)ध	–	प	–	(प)ध	म	धध	पमप	(म)ग	–	(सा)रे	सा	(ग)रे	सा	सा	रे
ला	ऽ	गी	ऽ	र	ह	तऽ	निऽऽ	स	ऽ	दि	न	प्या	ऽ	रे	ति
(नि)ध़	प़	सा	–	(म)रे	म	धध	पमप	(म)ग	–	(सा)रे	सा				
हा	ऽ	रे	ऽ	दे	ऽ	खऽ	नऽऽ	का	ऽ	ऽ	हि				
अंतरा															
												(प)म	प	(नि)ध	(नि)ध
												घ	रि	प	ल
सां	सां	सां	सां	रें	गं	(सां)रें	सा	(नि)सां	रेंनि	ध	प	(म)प	(प)गं	(सां)रें	सां
छि	न	मो	हे	जु	ग	सी	ऽ	बी	ऽऽ	त	त	नि	स	दि	न
रें	सां	(नि)ध	प	म	प	धध	पमप	(म)ग	ग	(सा)रे	सा				
च	ट	प	टि	ला	ऽ	गऽ	रऽऽ	ह	त	म	हिं				

राग आसावरी

ताल— त्रिताल (मध्य लय)

गायन शैली— छोटा ख्याल

शब्द

स्थायी— अरे मन समझ-समझ पग धरिए अरे मन इस जग में नहीं अपना कोई, परछाईं सों डरिए

अंतरा— दौलत दुनिया कुटुम कबीला इनसों नेहन कबहु न करिए, राम नाम सुख धाम जगत पति सुमिरन, सौं जग तरिए, अरे मन

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
धा	धिं	धिं	धा	धा	धिं	धिं	धा	धा	तिं	तिं	ता	ता	धिं	धिं	धा
×				2				0				3			
स्थायी															
				(प)म	म	प	सां	(नि)ध	प	पध	मप	(म)ग	(सा)रे	म	म
				अ	रे	म	न	स	म	झऽ	सऽ	म	झ	प	ग
प	प	प	–	(प)ध	म	प	प	(नि)ध	(नि)ध	(नि)ध	प	ध	म	पध	मप
ध	रि	ए	ऽ	अ	रे	म	न	इ	स	ज	ग	में	ऽ	नऽ	हींऽ
(म)ग	ग	रे	सा	रे	–	सा	–	(नि)सा	सा	(सा)गं	–	(सां)रें	–	सां	–
अ	प	ना	ऽ	को	ऽ	ई	ऽ	प	र	छा	ऽ	ईं	ऽ	सों	ऽ
रें	रें	(नि)ध	प												
ड	रि	ए	ऽ												
अंतरा															
								(प)म	–	प	प	(नि)ध	ध	(नि)ध	–
								दौ	ऽ	ल	त	दु	नि	या	ऽ
(ध)सां	सां	सां	सां	सां	–	सां	–	(नि)ध	ध	ध	–	सां	–	सां	सां
कु	टु	म	क	बी	ऽ	ला	ऽ	इ	न	सौं	ऽ	ने	ऽ	ह	न
(सां)गं	(सां)गं	रें	सां	नि	सां	(नि)ध	प	प	ध	नि	(नि)ध	–	प	धम	प
क	ब	हु	न	क	रि	ए	ऽ	रा	ऽ	म	ना	ऽ	म	सुऽ	ख
(म)ग	–	रे	सा	रे	रे	सा	सा	सा	सा	(सा)गं	गं	(सां)रें	–	सां	सां
धा	ऽ	म	ज	ग	त	प	ति	सु	मि	र	न	सौं	ऽ	ज	ग
(सां)रें	रें	(नि)ध	प	ध	म	प	सां								
त	रि	ए	ऽ,	अ	रे	म	न								

राग आसावरी

ताल— तीनताल **गत— मसीतखानी**

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
धा	धिं	धिं	धा	धा	धिं	धिं	धा	धा	तिं	तिं	ता	ता	धिं	धिं	धा
×				2				0				3			
स्थायी															
											धध	प	मम	प	प
											दिर	दा	दिर	दा	रा
ध	ध	प	मम	म	पनि	ध	प	मप	ग	रेस					
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा					
											रेरे	सा	सासा	नि़	सा
											दिर	दा	दिर	दा	रा
ध़	ध़	प़	म़म़	प़	नि़नि़	सा	रेम	ग	रे	सा					
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा					
अंतरा															
											मम	म	पप	ध	ध
											दिर	दा	दिर	दा	रा
सां	सां	सां	निसां	रें	मंमं	गं	रें	निसां	ध	प					
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा					
											मंगं	रें	सांसां	नि	सां
											दिर	दा	दिर	दा	रा
ध	ध	प	मम	म	पनि	ध	प	मप	ग	रेस					
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा					

© NCERT not to be republished

राग आसावरी

ताल– तीनताल **गत– रज़ाखानी**

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
धा	धिं	धिं	धा	धा	धिं	धिं	धा	धा	तिं	तिं	ता	ता	धिं	धिं	धा
×				2				0				3			
स्थायी															
ध	–	ध,	प	–	प,	म	प	नि	धध	पध	मप	ग–	ग,रे	–रे,	स
दा	ऽ	रा,	दा	ऽ	रा,	दा	रा	दा	दिर	दिर	दिर	दाऽ	र,दा	ऽर,	दा
अंतरा															
म	–	म,	प	–	प,	ध	ध	सं	रेंरें	गंगं	रेंरें	नि–	सं,ध	–ध	प
दा	ऽ	रा,	दा	ऽ	रा,	दा	रा	दा	दिर	दिर	दिर	दाऽ	र,दा	ऽर,	दा
गं	रेंरें	संसं	रेंरें	नि–	सं,ध	–ध,	प	प	मम	पध	मप	गग	रेंस	रेंम	पप
दा	दिर	दिर	दिर	दाऽ	र,दा	ऽर,	दा	दा	दिर	दिर	दिर	दारा	दारा	दारा	दारा

अभ्यास

इस राग के बारे में आप पढ़ चुके हैं। आइए, नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर देने का प्रयास करें–

1. राग आसावरी किस थाट के अंतर्गत आता है?
2. राग आसावरी का गायन समय बताइए।
3. क्या राग आसावरी के आरोह में शुद्ध नि का प्रयोग होता है?
4. राग आसावरी में कौन-से स्वर कोमल हैं?
5. राग आसावरी पर आधारित कोई दो फिल्मी गीत लिखिए तथा उस गीत के कलाकारों के बारे में भी लिखिए।
6. आरोह में राग आसावरी के चार स्वर समूह लिखिए।
7. राग आसावरी पर आधारित कोई एक श्लोक लिखिए तथा राग के मुख्य लक्षण बताइए।
8. राग आसावरी पर आधारित कोई एक बंदिश की स्वरलिपि लिखिए।
9. राग आसावरी में मंद्र सप्तक से मध्य सप्तक की दो एवं मध्य सप्तक की दो तानें बनाइए।

© NCERT not to be republished

सही या गलत बताइए–

1. राग आसावरी आश्रय राग की श्रेणी में नहीं आता है। (सही/गलत)
2. इसके आरोह में निषाद वर्जित स्वर होता है। (सही/गलत)
3. इस राग की जाति षाड्व संपूर्ण होती है। (सही/गलत)
4. राग आसावरी का गायन समय संध्याकाल है। (सही/गलत)
5. इसके आरोह तथा अवरोह में क्रमशः शुद्ध व कोमल निषाद प्रयोग होता है। (सही/गलत)

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. राग आसावरी का वादी ..... तथा संवादी ..... होता है।
2. राग आसावरी की जाति ..... होती है।
3. म म प ध़ प ध़ स्वर समूह ..... के अंतर्गत है। (आरोह/अवरोह)
4. सं नि ध़ ध़ प ध़ प म स्वर समूह ..... के अंतर्गत है। (आरोह/अवरोह)

सुमेलित कीजिए–

अ	आ
1. राग आसावरी का थाट	(क) दिन का दूसरा प्रहर
2. कोमल स्वर	(ख) सा रे म प ध़ सां
3. गायन समय	(ग) ध़
4. आरोह	(घ) ग़ ध़ नि़
5. अवरोह	(ड़) आसावरी
6. वादी स्वर	(च) सां नि़ ध़ प म ग़ रे सा

आइए, पाठ्यक्रम से हटकर कुछ भिन्न बातों पर भी चर्चा करें–

1. आप राग आसावरी में तीन-चार रिकॉर्डिंग सुनिए। 100 शब्दों में उनकी विवेचना लिखिए।
2. राग आसावरी पर आधारित कुछ फिल्मी गीतों की सूची बनाइए और उनमें प्रयुक्त स्वर संयोजन को लिखिए।

© NCERT not to be republished

राग देस

पंचम वादी अरू रिखब संवादी संजोग।
सोरट केहि सुरनतें देस कहत है लोग।।

—राग चन्द्रिकासार

राग विवरण

इस राग की उत्पत्ति खमाज थाट से मानी जाती है। इसमें दोनों निषाद का प्रयोग होता है— आरोह में शुद्ध तथा अवरोह में कोमल। अन्य सभी स्वर शुद्ध प्रयोग होते हैं। आरोह में गंधार व धैवत वर्ज्य हैं तथा अवरोह में सातों स्वरों का प्रयोग होता है; अत: इस राग की जाति औड्व-संपूर्ण है। वादी स्वर ऋषभ तथा संवादी पंचम है। गायन/वादन का समय रात्रि का दूसरा प्रहर है।

मुख्य बिंदु

थाट — खमाज

जाति — औड्व-संपूर्ण

स्वर — अवरोह कोमल नि, शेष स्वर शुद्ध

वादी — रे

संवादी — प

समय — रात्रि का दूसरा प्रहर

आरोह — सा रे म प नि सां

अवरोह — सं नि॒ ध प म ग रे स

पकड़ — रे मप नि॒धप, म प धऽ म ग रे गऽ नि॒ स

स्वर विस्तार — स रे म प नि॒ ध प म प ध प म ग रे ग नि॒ सा। रे नि॒ ध़ प़ म प़ नि॒ ध़ प़ म प़ नि॒ सा। रे म प ध म प म प नि॒ ध प म ग रे ग नि॒ सा। म ग रे स रे म प म प नि॒ ध प म प नि सं नि॒ ध प म रे नि॒ धि॒ नि॒ प, ध म ग रे म ग रे ग नि॒ सा। म प नि सं रें सं नि सं रें मं गं रें सं पं मं गं रें गं नि सं प नि सं रें नि॒ ध प ध म ग, रे म प नि॒ ध प म ग रे ग नि॒ सा।

© NCERT not to be republished

राग देस– धमार

शब्द

ताल— धमार
गायन शैली— धमार

स्थायी— साँवरे रंग डार गयो, मै तो बौराई जाने कहाँ कछु कीनों
अंतरा— सुध बुध छीन लई, छीन माई ऐसो महादुख दीनों, सावरे रंग

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
क	धि	ट	धि	ट	धा	ऽ	ग	ति	ट	ति	ट	ता	ऽ
×					2		0			3			
स्थायी													
									सा	मरे	सारे	पम	नीप
									सां	व	रेऽ	रं	ग
नी	–	–	नी	सांनी	सांप	–ध	मग	रेग	रे	रे	–	रे	–
डा	ऽ	ऽ	र	ऽऽ	ऽऽ	ऽदि	योऽ	ऽऽ	ऽ	मैं	ऽ	तो	ऽ
मरे	मरे	म	म	गरे	रे	रेग	सा	नी़	नी़	प़	नी़	सा	रेप
बौ	रा	ऽ	ई	ऽऽ	जा	ऽऽ	ने	ऽ	ऽ	क	हाँ	क	छुऽ
प	रे	रेप	म	ग	म	गरे	ग	रेसा	सा	मरे	सारे	पम	नीप
की	ऽ	ऽ	नो	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	सा	व	रेऽ	रं	ग
अंतरा													
म	–प	–	नी	–	नी	–	नी	–	सां	सां	–	–	–
सु	ऽध	ऽ	बु	ऽ	ध	ऽ	छी	ऽ	ऽ	न	ऽ	ऽ	ऽ
म	–प	–	नी	–	नी	–	नी	–	सां	सां	–	–	सां
सु	ऽध	ऽ	बु	ऽ	ध	ऽ	छी	ऽ	ऽ	न	ऽ	ऽ	ल
रें	नी	धप	–प	–	धम	–	प	नी	सां	रें	रें	रें	रें
ई	ऽ	ऽऽ	छी	ऽ	नऽ	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ई	ऽ	ऽ	ऽ
नी	–	–	सां	–	–	सां	सांनी	रेंसा	रें नी	नीप	–	प	–
ऐ	ऽ	ऽ	सो	ऽ	ऽ	म	हाऽ	ऽऽ	ऽऽ	दुः	ऽ	ख	ऽ
प	रे	प	म	ग	म	गरे	ग	रेसा	सा	मरे	सारे	पम	नीप
दी	ऽ	ऽ	नो	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	सां	व	रेऽ	रं	ग

© NCERT not to be republished

राग देस– त्रिताल (मध्य लय)

शब्द

ताल— त्रिताल (मध्य लय)
गायन शैली— छोटा ख्याल

स्थायी— मेहा रे बन-बन डार-डार मुरला बोले मेहा बौछारन बरसे मे।

अंतरा— कारि घटा घन फिर उमडावत पपिहा बोले सदारंग मनवा लरजे मेहा बौछारन बरसे मे।।

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
धा	धिं	धिं	धा	धा	धिं	धिं	धा	धा	तिं	तिं	ता	ता	धिं	धिं	धा
×				2				0				3			
स्थायी															
														म	प
														मे	ऽ
सांनि	–	सां	–	निसां	रें	सां	नि	ध	प	ध	(म)	–	म	प	प
हा	ऽ	रे	ऽ	ब	न	ब	न	डा	ऽ	र	डा	ऽ	र	मु	र
मप	ध	पम	–	मरे	–	–	–	रेसां	–	नि	–	ध	प	म	प
लाऽ	ऽ	बो	ऽ	ले	ऽ	ऽ	ऽ	मे	ऽ	हा	ऽ	ऽ	ऽ	बौ	ऽ
पध	–	(म)	ग	म	ग	रे	–	रेग	मप	धप	मग	रेग	सारे	म	प
छा	ऽ	र	न	ब	र	से	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	मे	ऽ
अंतरा															
प						सां									
म	–	म	म	प	–	नि	नि	सां	सां	सां	सां	नि	सां	सां	सां
का	ऽ	रि	घ	टा	ऽ	घ	न	फि	र	उ	म	डा	ऽ	व	त
गुं	गुं							नि							
रें	रेंगुं	रें	सां	रें	नि	सां	–	सां	सां	–	नि	–	ध	म	प
प	पिऽ	हा	ऽ	बो	ऽ	ले	ऽ	स	द	ऽ	रं	ऽ	ग	म	न
		प						रें						प	
मप	ध	म	मग	रें	–	–	–	सां	–	नि	–	ध	–	म	प
वाऽ	ऽ	ल	रऽ	जे	ऽ	ऽ	ऽ	मे	ऽ	हा	ऽ	ऽ	ऽ	बौ	ऽ
प															
ध	–	(म)	ग	म	ग	रे	–	रेग	मप	धप	मग	रेग	सारे	म	प
छा	ऽ	र	न	ब	र	से	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ,	मे	ऽ

© NCERT not to be republished

देस त्रिताल (मध्य लय)

शब्द

ताल— तीनताल

स्थायी— झूम-झूम आए कारे-कारे बदरा, बरसन लागे बड़ी बड़ी बूँदन, झूम-झूम

गायन शैली— छोटा ख्याल

अंतरा— निशि अंधियारी जिया डर पावे प्रेम रसिक घर आ जा आ जा झूम-झूम

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
धा	धिं	धिं	धा	धा	धिं	धिं	धा	धा	तिं	तिं	ता	ता	धिं	धिं	धा
×				2				0				3			
स्थायी															
											मग	रे	म	–	प
											झूऽ	म	झू	ऽ	म
नि	–	सं	–रें	नि	निध	पध	पध	म	मग	गरे,	म	ग	रे	–	ग
आ	ऽ	ए	ऽऽ	का	रेऽ	काऽ	रेऽ	ब	दऽ	राऽ,	ब	र	स	ऽ	न
स	–	ऩि	स	स	सं	रें	सं	नि	ध	प,	मग	रे	म	–	प
ला	ऽ	गे	ऽ	ब	ड़ी	ब	ड़ी	बूँ	द	न,	झूऽ	म	झू	ऽ	म
अंतरा															
											म	प	नि	सं	नि
											नि	शि	अं	ऽ	धि
सं	–	सं	नि	सं	निसं	रें	सं	नि	ध	प	नि	सं	रें	मं	मं
या	ऽ	री	जि	या	डऽ	ऽ	र	पा	ऽ	वे	प्रे	ऽ	म	ऽ	र
गरें	गं	नि	सं	पनि	सरें	गरें	संनि	सरें	संनि	धप,	मग	रे	म	–	प
सिऽ	क	घ	र	आऽ	ऽऽ	जाऽ	ऽऽ	आऽ	ऽजा	ऽऽ,	झूऽ	म	झू	ऽ	म

© NCERT not to be republished

राग देस

ताल— एकताल

गायन शैली— छोटा ख्याल

शब्द

स्थायी— नाचत कान्ह नचावे गुइयां, होरी के खेलैया।

अंतरा 1— अबीर गुलाल लै, मुख पर मलो री, बजावे मिरदंग, फाग में रमैया।

अंतरा 2— छेड़त कान्हौ डारे रंग, भर-भर पिचकारी, अरज करूँ मैं तोसे, छोड़ो मोरी बैंया।।

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
धिं	धिं	धागे	तिरकिट	तू	ना	क	त्ता	धागे	तिरकिट	धी	ना
×		0		2		0		3		4	
स्थायी											
सां	नी	सां	नी	ध	प	प	ध	प	म	ग	म
ना	च	त	का	ऽ	न्ह	न	चा	वे	गु	इ	यां
रे	ग	रे	सा	नी	सा	रेम	पनी	सारें	गरें	सांनी	सां
हो	री	ऽ	के	ऽ	खे	लैऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	याऽ	ऽ
अंतरा 1											
म	ग	रे	सा	नी	सा	रेग	पम	गम	ग	–	रे
अ	बी	ऽ	र	ऽ	गु	लाऽ	ऽऽ	ऽऽ	ल	ऽ	लै
रे	नी	धनी	ध	प	प	मप	सांनी	धनी	ध	प	–
मु	ख	ऽऽ	प	र	म	लोऽ	ऽऽ	ऽऽ	री	ऽ	ऽ
नीसां	रेंगं	पंमं	गं	रें	सां	नी	सां	रें	नी	ध	प
बऽ	ऽऽ	ऽऽ	जा	ऽ	वे	मि	र	ऽ	दं	ऽ	ग
म	ग	रेग	सा	नी	सा	रेम	पनी	सारें	गरें	सांनी	सां
फा	ऽ	गऽ	में	ऽ	र	मैऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	याऽ	ऽ
अंतरा 2											
म	रे	म	म	प	प	म	प	नीध	ध	–	प
छे	ऽ	ड़	त	का	न्ह	डा	ऽ	रेऽ	रं	ऽ	ग
रे	नी	धनी	ध	प	म	प	प	नी	सां	नी	सां
भ	र	ऽऽ	भ	र	पि	च	का	ऽ	ऽ	री	ऽ
नीसां	रेंगं	पंमं	गं	रे	सां	नी	सां	रें	नी	ध	प
अऽ	ऽऽ	ऽऽ	र	ज	क	रूं	ऽ	मैं	तो	ऽ	से
म	ग	रेग	नी	–	सा	रेम	पनी	सारें	गरें	सांनी	सां
छो	ड़ो	ऽऽ	मो	ऽ	री	बैंऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	यांऽ	ऽ

© NCERT not to be republished

राग देस— त्रिताल (रचनाकार— श्रीगुरू लालाबोबा देशपांडे)

शब्द

ताल— तीनताल

गायन शैली— तराना

स्थायी— तदिया रे त दीम्तनन दीम्त दीम्तनन देरे ना दीम्तन देरे-देरे तदीम्त दारे दानी नित तन देरे ताना रे दानि।

अंतरा— नितन्न तन देरे तदानी दिर-दिर तोम् देरे ना देरे ना तोम् तदारे तारे दानी तनूम-तनूम तोम् तने दीम-दीम तन दिर-दिर तदारे दानि तदानि दानि ओदेतन तदिया नारे तारे दानि।

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
धा ×	धिं	धिं	धा	धा 2	धिं	धिं	धा	धा 0	तिं	तिं	ता	ता 3	धिं	धिं	धा
स्थायी															
			म रे त	म दि	प या	नि रे	सां त	निसां दीऽ	रें ऽ	नि म्त	ध न	प न	रे म दी	रे ऽ	म प म्त
म दी	रे ऽ	म रे म्त	ग न	रे न	सा दे	नि़ रे रे	नि़ ना	सा दी	– ऽ	नि सा म्त	सा न	म रे दे	म रे	प म दे	प रे
सां नि त	सां दी	– ऽ	नि रे म्त	सां दा	नि रे	ध दा	प नी	प म नि	प त	नि सां त	नि न	ध दे	प रे	म ता	ग ना
रे रे	ग दा	नि़ सा नि,	म रे त												
अंतरा															
								प म नि	म ता	– ऽ	म न्न	प त	प न	सां नि दे	नि रे
सां त	सां दा	सां नी	– ऽ	सां नि– दिर	सां– दिर	रें तो	–– ऽम्	सां नि दे	नि रे	नि ना	नि दे	सां रे	नि ना	सां तो	–सं ऽम्
नि रें त	नि दा	ध ऽ	प रे	नि ध ता	म रे	प दा	प नि	म प त	रें नू	– ऽ	मं रें म्त	मं रें नू	गं ऽ	नि सां म्तो	–सं ऽम्
सां नि त	सां न	मं रें दी	मं ऽ	– ऽ	–– ऽम	मं रें दी	–– ऽम	सां नि त	नि न	सां– दिर	सां– दिर	नि रें त	सां दा	नि रे	ध दा
प नि	नि ध त	म दा	प नि	सां नि दा	सां नि	प म ओ	प दे	सां नि त	सां न	नि रें त	नि दि	ध या	प ना	म रे	ग ता
रे रे	नि़ ग दा	म सा, नि,	रे त												

राग देस

ताल– तीनताल **गत– मसीतखानी**

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
धा	धिं	धिं	धा	धा	धिं	धिं	धा	धा	तिं	तिं	ता	ता	धिं	धिं	धा
×				2				0				3			
स्थायी															
											ऩिस	रे	मम़	प	नि
											दिर	दा	दिर	दा	रा
सं	सं	सं	संसं	रें	निनि	ध	प	मग	रेग	ऩिस					
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा					
मान्झा															
म़	प़प़	ऩि	स	रे	मम	पनि	धप	रेग	ऩि	स					
दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा					
अंतरा															
											मम	म	पप	नि	नि
											दिर	दा	दिर	दा	रा
सं	सं	सं	निसं	रें	मंमं	गं	रें	(रें)गं	(सं)नि	सं					
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा					
											रेंमं	गं	रेंगं	नि	सं
											दिर	दा	दिर	दा	रा
म	पप	(सं)नि	सं	रे	मम	पनि	धप	मग	रेग	ऩिस					
दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा					

© NCERT not to be republished

राग देस

ताल– तीनताल **गत– रज़ाखानी**

1 2 3 4 धा धिं धिं धा ×	5 6 7 8 धा धिं धिं धा 2	9 10 11 12 धा तिं तिं ता 0	13 14 15 16 ता धिं धिं धा 3
स्थायी			
सं – ध प दा ऽ दा रा	म ग रे स दा रा दा रा	रे मम प ध दा दिर दा रा	म पप नि नि दा दिर दा रा
अंतरा			
सं – –, रेंरें दा – र, दिर रे गग रे म दा दिर दा रा	सं निनि ध प दा दिर दा रा ग सरे नि॒ स दा दारा दा रा	ध मम पप धध दा दिर दिर दिर	म– म,ग –ग, रे दाऽ र,दा ऽर, दा

अभ्यास

इस राग के बारे में आप पढ़ चुके हैं। आइए, नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर देने का प्रयास करें–

1. राग देस में ज़्यादातर किस ऋतु के गीत गाए जाते हैं?
2. राग देस का गायन समय बताइए।
3. राग देस का वादी एवं संवादी स्वर बताइए।
4. राग देस की पकड़ लिखिए।
5. राग देस पर आधारित कोई दो फिल्मी गीत लिखिए तथा उस गीत की पृष्ठभूमि की विवेचना कीजिए।
6. राग देस में चार तानें लिखिए— आठ मात्रा तथा बारह मात्रा में।
7. राग देस पर आधारित कोई एक श्लोक लिखिए तथा राग के मुख्य लक्षण बताइए।
8. राग देस पर आधारित किसी एक बंदिश की स्वरलिपि लिखिए।

© NCERT not to be republished

सही या गलत बताइए–

1. राग देस आश्रय राग की श्रेणी में नहीं आता है। (सही/गलत)
2. इसके आरोह में गंधार वर्जित स्वर होता है। (सही/गलत)
3. इस राग की जाति षाड्व संपूर्ण है। (सही/गलत)
4. इसके आरोह तथा अवरोह में क्रमशः शुद्ध व कोमल निषाद प्रयोग होता है। (सही/गलत)

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. राग देस का वादी ..... तथा संवादी ..... होता है।
2. राग देस की जाति ..... होती है।
3. मेहारे ..... डार-डार ..... ।
4. राग देस के अवरोह में ..... का प्रयोग होता है।
5. झूम-झूम ..... कारे ..... बदरा ..... बरसने लागे ..... बड़ी ..... ।

सुमेलित कीजिए–

अ	आ
1. राग देस का थाट	(क) रात्रि का दूसरा प्रहर
2. कोमल स्वर	(ख) स रे म प नि सां
3. गायन समय	(ग) झूम झूम आए
4. आरोह	(घ) अवरोह में निषाद कोमल
5. अवरोह	(ङ) खमाज
6. छोटा ख्याल	(च) सां नि ध प म ग रे सा

आइए, पाठ्यक्रम से हटकर कुछ भिन्न बातों पर भी चर्चा करें–

1. राग देस में कितने तरह के स्वर समूह हैं, सोचिए और लिखिए।
2. राग देस पर आधारित फिल्मी संगीत ढूँढकर उनमें प्रयोग किए गए स्वरों का विवेचन कीजिए।

© NCERT not to be republished

राग मालकौंस

मृदू गमौ धनी चैव समौ संवादिवादिनौ।
परिहीनो मालकौशिर्निशीथात्परमौडुवः।।

—रागचन्द्रिकायाम्

राग विवरण

यह राग भैरवी थाट से उत्पन्न है। इसमे ऋषभ व पंचम स्वर आरोह एवं अवरोह में वर्ज्य हैं, अत: इसकी जाति औड्व-औड्व मानते हैं। वादी स्वर मध्यम व संवादी षड्ज है। गायन समय रात्रि का तीसरा प्रहर है। यह गंभीर प्रकृति का अत्यंत लोकप्रिय राग है। अतः बहुत से गायक-वादक इससे परिचित हैं। पुरानी फिल्मों के बहुत से गीत इस राग पर आधारित हैं।

मुख्य बिंदु

थाट — भैरवी

जाति — औड्व-औड्व

स्वर — रे, प वर्जित, ग ध नि कोमल, म शुद्ध

वादी — मध्यम

संवादी — षड्ज

समय — रात्रि का तीसरा प्रहर

आरोह — नि़ सा ग म ध नि सां

अवरोह — सां नि ध म ग म ग सा,

पकड़ — ध़ नि़ स म, ग म ग स

स्वर विस्तार — ध़ नि़ स म ग म ग स नि़ स ध़ नि़ सा। नि़ स ग म ध म ग म ग स नि़ स ध़ नि़ स म ग म ग सा। म ग म ग स ग म ध नि ध म ग म ध नि सं नि ध म ग म ग सा। ग म ध नि सं गं मं गं सं नि ध नि सं — ग म ध नि सं मं गं मं गं सं नि सं ध नि सं नि ध नि ध म ग म ध नि ध म ग म ध म ग म ग स नि़ स ध नि़ स म ग म ग स ध़ नि़ सा।

© NCERT not to be republished

मालकौंस– एकताल (विलंबित)

शब्द

ताल— एकताल
गायन शैली— विलंबित ख्याल
स्थायी— पगला गन दे महाराज कुँवर
अंतरा— सदा रंगीली पीतमु ने पावन दे

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
धिं	धिं	धागे	तिरकिट	तू	ना	क	त्ता	धागे	तिरकिट	धी	ना
×		0		2		0		3		4	
स्थायी											
							सा				नि़
							ग़	सा	नि़	ध़	ध़ नि़
							प	ग	ला	ऽ	गन
			म					ध़		ध़	
सा	म	–	ग़	म	ध़	–	–	म	ध़	नि़	ध़
दे	ऽ	ऽ	म	ऽ	हा	ऽ	ऽ	रा	ऽ	ज	कुं
			म				सा				
म	–	–	ग़	म	ग़	सा	ग़				
व	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र,	प				
अंतरा											
								म		नि़	सां
								ग़	म	ध़	–नि़
								स	दा	ऽ	ऽरं
सां							नि़				
नि़	सां	–	सां	–	निसां	–	सां	–	नि़	ध़	म
गी	ऽ	ऽ	ली	ऽ	ऽऽ	ऽ	पी	ऽ	त	मु	ने
			म				सा				
म	–	–	ग़	म	ग़	सा	ग़				
पा	ऽ	ऽ	व	ऽ	न	दे,	प				

© NCERT not to be republished

मालकौंस

शब्द

ताल— तीनताल

गायन शैली— छोटा ख्याल

स्थायी— कोयलिया बोले अमुवा डार पर, ऋतु बसंत को देत संदेसवा

अंतरा— नव कलियन पर गूँजत भँवरा, उनके संग करत रंगरलियाँ, ऋतु बसंत को देत संदेसवा।

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
धा	धिं	धिं	धा	धा	धिं	धिं	धा	धा	तिं	तिं	ता	ता	धिं	धिं	धा
×				2				0				3			
स्थायी															
								सं	संनि	गं	सं	ध	म	ध	नि
								को	यऽ	लि	या	बो	ले	अ	मु
सं	–	–	ध	नि	ध	म	म	ग	ग	म	धनि	सं	नि	सं	–
वा	ऽ	ऽ	डा	ऽ	र	प	र	ऋ	तु	ब	संऽ	ऽ	त	को	ऽ
ग	–	म	ध	म	ग	सा	–								
दे	ऽ	त	सं	दे	स	वा	ऽ								
अंतरा															
								ग	ग	म	म	ध	ध	नि	नि
								न	व	क	लि	य	न	प	र
सं	–	सं	सं	गं	नि	सं	–	नि	नि	नि	–	सं	–	सं	सं
गूँ	ऽ	ज	त	भँ	व	रा	ऽ	उ	न	के	ऽ	सं	ऽ	ग	क
ध	म	ध	नि	ध	ध	म	–	ग	ग	म	धनि	सं	नि	सं	–
र	त	रं	ग	र	लि	याँ	ऽ	ऋ	तु	ब	संऽ	ऽ	त	कौ	ऽ
ग	–	म	ध	म	ग	सा	–								
दे	ऽ	त	सं	दे	स	वा	ऽ								

© NCERT not to be republished

मालकौंस

शब्द

ताल— तीनताल
गायन शैली— छोटा ख्याल (मध्य लय)

स्थायी— मोहे लागा ध्यान, तोरा त्रिपुरारी गिरिजा के नाथ मोहे
अंतरा— अंग भस्म गरे विषधर माला जटा जूट सू, मेला भाला सीस सोहे सुर

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
धा	धिं	धिं	धा	धा	धिं	धिं	धा	धा	तिं	तिं	ता	ता	धिं	धिं	धा
×				2				0				3			
स्थायी															
						ध़	नि़	स	ग़	म	ग़	सा	ध़	–	नि़
						मो	हे	ला	ऽ	ऽ	गा	ऽ	ध्या	ऽ	न
सा	–	–	–	सा	–	–	–	म	म	म	–	धधमग	मधनि	संसं	सरेसं
तो	ऽ	ऽ	ऽ	रा	ऽ	ऽ	ऽ	त्रि	पु	रा	ऽ	रीऽऽ	ऽऽऽ	ऽगि	रिऽऽ
ध़	नि़	ध़	म	ग़	सा	ध़	नि़								
जा	ऽ	के	ना	ऽ	थ	मो	हे								
अंतरा															
								ध़	–	ध़	ग़	–	म	ध़	ध़
								अं	ऽ	ग	भ	ऽ	स्म	ग	रे
नि़	नि़	नि़	नि़	संगंसं		मंगंसं		धनि		संसं		सं	सं	गं	सं	सं	–
वि	ष	ध	र	माऽऽ		ऽऽऽ		लाऽ		ऽऽ		ज	टा	ऽ	जू	ऽ	ट	सू	ऽ
सं	–	सं	–	ध़		नि़		ध़		म		ग़	–	म	धनि	सं	सं	सं	सं
मे	ऽ	ला	ऽ	भा		ऽ		ला		ऽ		सी	ऽ	स	सोऽ	ऽ	हे	सु	र

मालकौंस (रचनाकार– उस्ताद वासिफुद्दीन डागर)

शब्द

ताल— चौताल
गायन शैली— ध्रुपद

स्थायी— पूजन चली महादेव चंद्रवदनी मृगनयनी हंस गमनी पारवती।
अंतरा— कर लिये अग्र थाल, पुष्पन के गुंधे हार मुख दियारा जराए देवन देव महादेव।
संचारी— साज नख शिख सोलाहू शृंगार बरनी ना जात सुंदरता छवि
आभोग— तानसेन धूप दीप नई वई दले ध्यान लगो हर हर हर आदि देव

© NCERT not to be republished

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
धा	धा	दिं	ता	किट	धा	दिं	ता	तिट	कत	गदि	गन
×		0		2		0		3		4	
स्थायी											
सा	म	म	म	म	मग	गस	ग	म	ग	सा	सा
पू	ऽ	ज	न	च	लीऽ	मऽ	हा	ऽ	दे	ऽ	व
नी	–	सा	म	म	म	ग	गसा	मग	म	म	म
चं	ऽ	द्र	ब	द	नी	मृ	गऽ	न	य	नी	ऽ
मग	मग	म	नी	ध	म	ग	–	ग	गम	गनी	सानी
हं	ऽ	स	ग	म	नी	पा	ऽ	र	वऽ	तीऽ	ऽऽ
अंतरा											
ग	–	म	नीध	नीध	सानी	सानी	सां	सां	सां	–	ल
क	ऽ	र	लि	ऽ	ये	अ	ऽ	ग्र	था	ऽ	ल
सां	सांनी	गं	सां	ध	ध	म	नीध	नी	ध	म	म
पु	ष	प	न	के	ऽ	गुं	धे	ऽ	हा	ऽ	र
मगं	गं	गं	गं	गं	=	सां	–	नी	सां	सां	सां
मु	ख	ऽ	दि	या	ऽ	रा	ऽ	ज	रा	ऽ	ए
सां	ध	नी	ध	–	म	मग	मग	म	ग	–	सा
दे	व	न	दे	ऽ	व	म	हा	ऽ	दे	ऽ	व
संचारी											
सध	स	गम	गम	म	मग	ग	गस	म	गम	म	म
सा	ज	न	ख	शि	ख	सो	ला	हू	श्रीं	गा	र
गम	म	ध	नी	ग	सा	सा	ग	ग	म	ग	सा
ब	र	नी	ना	जा	ऽ	त	सुं	द	रता	छ	वि
आभोग											
गम	–	म	नीध	–	ध	धनी	नी	–	सां	–	सां
ता	ऽ	न	सै	ऽ	न	धू	ऽ	प	दी	ऽ	प
नी	सा	नी	सा	नी	ध	नी	ध	–	–	म	म
न	ई	व	ई	द	ल	ध	या	ऽ	न	ल	गो
म	म	म	म	म	म	ग	ग	म	ग	–	सा
ह	र	ह	र	ह	र	आ	ऽ	दि	दे	ऽ	व

© NCERT not to be republished

मालकौंस

ताल– तीनताल **गत– मसीतखानी**

1 2 3 4 धा धिं धिं धा ×	5 6 7 8 धा धिं धिं धा 2	9 10 11 12 धा तिं तिं ता 0	13 14 15 16 ता धिं धिं धा 3
स्थायी			
		मगम दिर	मग सस निध़ ऩि दा दिर दा रा
स म म मगग दा दा रा दिर	म धनि ध म दा दिर दा रा	गम ग स दा दा रा	
मान्झा			
म़ ध़ध़ धसऩि स दा दिर दा रा	ऩि सस ग म दा दिर दा रा	मधम गम गस दा दा रा	
अंतरा			
		मगग दिर	ग मम मनिध धसंनि दा दिर दा रा
सं सं सं धनि दा दा रा दिर	सं संमगंम मंगं सं दा दिरदिर दा रा	निध संनि सं दा दा रा	
		गंमं दिर	गं संसं ध नि दा दिर दा रा
सं सं सं निसं दा दा रा दिर	ध निनि ध म दा दिर दा रा	गम ग स दा दा रा	

मालकौंस

ताल— तीनताल **गत— रज़ाखानी**

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
धा	धिं	धिं	धा	धा	धिं	धिं	धा	धा	तिं	तिं	ता	ता	धिं	धिं	धा
×				2				0				3			
स्थायी															
						गग	मम	ग–	ग,नि़	–नि़,	स	ग	मम	ध	नि
						दिर	दिर	दाऽ	र,दा	ऽर,	दा	दा	दिर	दा	रा
सं	–	नि ध	नि	ध	म										
दा	ऽ	दा	रा	दा	रा										
अंतरा															
सं	–	–,	ध	–	नि	सं	मंमं	गं	सं	निगं	संगं	नि–	नि,ध	–ध,	म
दा	ऽ	र,	दा	ऽ	रा	दा	दिर	दा	रा	दारा	दारा	दाऽ	र,दा	ऽर,	दा
ग	मम	ध	नि	सं	–										
दा	दिर	दा	रा	दा	ऽ										

मालकौंस

ताल— तीनताल **गत— रज़ाखानी**

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
धा	धिं	धिं	धा	धा	धिं	धिं	धा	धा	तिं	तिं	ता	ता	धिं	धिं	धा
×				2				0				3			
स्थायी															
ध़	–ध़	नि़	स	म	–	ग	–ग	म	ध	–	ग	–ग	म	ध	नि
दा	ऽर	दा	रा	दा	ऽ	दा	ऽर	दा	दा	ऽ	दा	ऽर	दा	दा	रा
सं	–	–,	नि	–	ध	म	–	ग	मम	धध	मग	ग–	म,ग	–ग	स
दा	–	द,	दा	ऽ	रा	दा	ऽ	दा	दिर	दिर	दिर	दाऽ	र,दा	ऽर,	दा
सं	–	–	नि	–	ध	म	–	ग	मम	धध	मम	ग–	म,ग	–ग	,स
दा	ऽ	र,	दा	ऽ	रा	दा	ऽ	दा	दिर	दिर	दिर	दाऽ	र,दा	ऽर,	दा
अंतरा															
सं	–	–,	ग	–	म	ध	नि	सं	मंमं	गंगं	मंमं	मं–	गं नि	–नि,	सं
दा	ऽ	र,	दा	ऽ	रा	दा	रा	दा	दिर	दिर	दिर	दाऽ	र,दा	ऽर,	दा
ग मं	–	गं	मंमं	गं	सं,	नि सं	–	ध	निनि	ध	म	ग	मम	ध	नि
दा	ऽ	दा	दिर	दा	रा,	दा	ऽ	दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा
सं	–	–,	नि	–	ध	म	–	ग	मम	धध	मम	ग–	म,ग	–ग	स
दा	ऽ	र,	दा	ऽ	रा	दा	ऽ	दा	दिर	दिर	दिर	दाऽ	र,दा	ऽर,	दा

© NCERT not to be republished

अभ्यास

इस राग के बारे में आप पढ़ चुके हैं। आइए, नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर देने का प्रयास करें–

1. राग मालकौंस किस थाट के अंतर्गत आता है?
2. राग मालकौंस किस समय गाया-बजाया जाता है?
3. राग मालकौंस में शुद्ध स्वर कौन से हैं?
4. राग मालकौंस में पंचम की क्या स्थिति है?
5. राग मालकौंस पर आधारित कोई दो फिल्मी गीत लिखिए तथा उस गीत के कलाकारों के बारे में भी लिखिए।
6. राग मालकौंस पर आधारित कोई एक श्लोक लिखिए तथा राग के मुख्य लक्षण बताइए।
7. राग मालकौंस पर आधारित किसी एक बंदिश की स्वरलिपि लिखिए।
8. किन्हीं दो प्रसिद्ध गीतकार और संगीतकार का योगदान बताइए जिन्होंने राग मालकौंस में कुछ रचनाएँ की हों।

सही या गलत बताइए–

1. राग मालकौंस आश्रय राग की श्रेणी में नहीं आता है। (सही/गलत)
2. इसके आरोह में निषाद वर्जित स्वर है। (सही/गलत)
3. इस राग की जाति षाड्व होती है। (सही/गलत)
4. राग मालकौंस भोर के समय गाया जाता है। (सही/गलत)
5. इसके आरोह तथा अवरोह में क्रमशः शुद्ध व कोमल निषाद प्रयोग होता है। (सही /गलत)

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. राग मालकौंस का वादी ..... तथा संवादी ..... होता है।
2. राग मालकौंस की जाति ..... होती है।
3. ध़ नि़ स ..... म ..... म ग़ ..... नि़ स।
4. ग़ म़ ..... नि़ ..... सं ..... म ग़ स।
5. इस राग की जाति ..... है।

© NCERT not to be republished

सुमेलित कीजिए–

अ	आ
1) राग मालकौंस का थाट	क) रात्रि का तीसरा प्रहर
2) कोमल स्वर	ख) स ग॒ म ध॒ नि॒ सं
3) गायन समय	ग) औड्व-औड्व
4) आरोह	घ) ग ध नि
5) अवरोह	ङ) भैरवी
6) जाति	च) सं नि॒ ध॒ म ग॒ म ग॒ म

आइए, पाठ्यक्रम से हटकर कुछ भिन्न बातों पर भी चर्चा करें–

1. राग मालकौंस में गाए गए कुछ भजनों का संकलन कीजिए। खुद गाकर रिकॉर्ड कीजिए और कक्षा में सुनाइए।
2. राग मालकौंस पर कोई धुन बजाइए और बताइए कि जब वह धुन गाते या बजाते हैं तो क्या अंतर होता है।

© NCERT not to be republished

राग काफी

मृदु मध्यम गांधार है, मृदु तीवर हुँ निखाद।
काफी सुन्दर राग है, द्रुवप-स वादी-संवादी।।

—चंद्रिकासार

राग विवरण

यह राग काफी थाट से उत्पन्न होता है। इसमें गांधार व निषाद कोमल तथा शेष सब स्वर शुद्ध लगते हैं। किंतु कभी-कभी शुद्ध गांधार एवं शुद्ध निषाद का अल्प प्रयोग सौंदर्यवर्धन के लिए भी किया जाता है। इसका वादी स्वर पंचम व संवादी स्वर षड्ज है। कुछ गुणीजन गांधार और निषाद का संवाद मानते हैं। इस राग की जाति संपूर्ण-संपूर्ण है। गायन-समय मध्य रात्रि का माना जाता है। कोई-कोई इसका गायन समय साँयकाल भी मानते हैं। सर्वसाधारण में यह राग लोकप्रिय है। इसके आरोह में तीव्र गांधार और तीव्र निषाद अनेक बार लगाए हुए दिखाई देते हैं। इन स्वरों के उचित प्रयोग से इस राग का वैचित्र्य बढ़ता है। किंतु यह ध्यान रखना चाहिए कि तीव्र ग और तीव्र नि इस राग के नियमित स्वर नहीं हैं। कभी-कभी क्वचित कोमल धैवत लेकर भी समझदार गायक राग-हानि नहीं होने देते, किंतु यह प्रयोग गायक की कुशलता पर निर्भर है। इस राग की विशेषता सा, ग, प, नि, स्वरों में है। साधारण श्रोतागण 'सासा, रेरे, ग ग, म म, प' विशिष्ट स्वर-समुदाय से तत्कालीन ही इस राग को पहचान लेते हैं। इस राग में ठुमरी, दादरा और होरी गाने का प्रचलन है।

मुख्य बिंदु

थाट — काफी
जाति — संपूर्ण-संपूर्ण
स्वर — ग, नि, कोमल-शेष स्वर शुद्ध
वादी — पंचम
संवादी — षड्ज
समय — मध्य रात्रि
आरोह — सा रे, ग, म, प, ध नि सां
अवरोह — सां नि ध, प, म ग, रे, सा
पकड़ — सा सा, रे रे, ग ग, म म, प
स्वर विस्तार — स रे ग म प म ग रे ग म प ध नि ध प म ग रे स। स नि़ ध़ प़ म़ प़ ध़ नि़ ध़ प़ म़ प़ ध़ नि़ स रे ग म प म ग रे स। स स रे रे ग ग म म प प म ग म प ध नि ध प म ग रे स। स, नि़ स रे ग म प, ग म प ध नि सं प सं नि ध प म प ध नि सं रें गं मं पं मं गं रें स नि ध प म ग रे प म ग रे स नि़ स रे ग म प म ग रे स।

काफी

शब्द

ताल— त्रिताल

गायन शैली— छोटा ख्याल

स्थायी— कदर पिया नैया मोरि कैसे लागे पार, तू खेवट अनाड़ी हूँ ठाड़ि मझधार

अंतरा— ना मोरे नैया ना रे खिवैया आन पड़ी मझधार कदर पिया नैया मोरि कैसे लागे पार

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
धा	धिं	धिं	धा	धा	धिं	धिं	धा	धा	तिं	तिं	ता	ता	धिं	धिं	धा
×				2				0				3			
स्थायी															
			ग म	ग	ग	म	प	ध	म	प ग	म	म ग	ग	सा रे	
			क	द	र	पि	या	नै	या	मो	रि	कै	से	ला	गे
प	–	–	ग	म	ध	नि	सां	रें	नि	–	ध नि	ध	प	ध	म
पा	र्	ऽ	तु	खे	व	ट	अ	ना	ड़ी	ऽ	हुँ	ठा	ड़ि	म	झ
प	–	–	म												
धा	र्	ऽ,	क												
अंतरा															
								(म)	–	म	प	सां नि	–	प सां	–
								ना	ऽ	मो	रे	नै	ऽ	या	ऽ
सारें	मं गं	रें	सां	रें	नि	सां	–	सां नि	–	सा	सां	निसां	रें नि	ध	म
नाऽ	ऽ	रे	खि	वै	ऽ	या	ऽ	आ	ऽ	न	प	ड़ीऽ	ऽ	म	झ
प	–	–	ग	म	ध	नि	सां	नि	ध	म	प	म ग	ग	रे	सा रे
धा	र्	ऽ	क	द	र	पि	या	नै	या	मो	रि	कै	से	ला	गे
			ग												
प	–	–	म												
पा	र	ऽ,	क												

© NCERT not to be republished

काफी

शब्द

ताल— त्रिताल

गायन शैली— छोटा ख्याल

स्थायी— जिन डारो रंग मानो गिरीधारी मोरी बात, जिन डारो रंग मानो गिरधारी, अब सास सुनेगी देगी गारी हम हारी

अंतरा 1— डमक डमक डमरू गत बाजत मत संगीत बिचारी ततकारी

अंतरा 2— हर रंग कहाकहुँ अब मैं तो सोऽ अनगिन देऊँ मैं गारी दे दे तारी

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
धा	धिं	धिं	धा	धा	धिं	धिं	धा	धा	तिं	तिं	ता	ता	धिं	धिं	धा
×				2				0				3			
स्थायी															
						ग म	प	ग	म	रे ग	सा रे	रे	ग	म	म
						जि	न	डा	रो	रं	ग	मा	नो	गि	री
प	प	ध	प	म	ग	ग म	प	ग	म	रे ग	सा रे	रे	ग	म	म
धा	री	मो	री	बा	त,	जि	न	डा	रो	रं	ग	मा	नो	गि	री
प	प	–	–	–	–	ग म	ग	म	नि	ध	नि	ध	प	ध	म
धा	री	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	अ	ब	सा	ऽ	स	सु	ने	गी	दे	गी
प	प	ध	प	ग म	ग	ग म	प								
गा	री	ह	म	हा	री,	जि	न								
अंतरा 1															
								सां	नि	ध	सां	नि	ध	म	प
								ड	म	क	ड	म	क	ड	म
ग	–	रे	म	ग	–	रे	सा	नि़	सा	रे	–	रे	ग	म	म
रू	ऽ	ग	त	बा	ऽ	ज	त	म	त	सं	ऽ	गी	ऽ	त	बि
प	प	ध	म	प	प	–	–								
चा	री	त	त	का	री	ऽ	ऽ								
अंतरा 2															
								म	म	प	ध	नि	नि	सां	सां
								ह	र	रं	ग	क	हा	क	हुँ
नि	नि	सां	–	सां नि	सां नि	ध	प	नि	नि	सां	सां	निसां	रें	सां	नि
अ	ब	मैं	ऽ	तो	ऽ	सो	ऽ	अ	न	गि	न	देऽ	ऽ	ऊँ	मैं
ध	प	ध	प	ग म	ग	ग म	प								
गा	री	दे	दे	ता	री,	जि	न								

© NCERT not to be republished

काफ़ी

ताल— त्रिताल मध्य लय

गायन शैली— छोटा ख्याल

शब्द

स्थायी— छाँड़ो-छाँड़ो छैला मोरि बैंयाँ दुखत मोरि नरम
. कलाई कैसे तुम कैसे तुम निडर लाल मग रोकत
पराई छाँड़ो

अंतरा— कैसे तुम महाराज आवत न तोको लाज जानो ना
कस को राज पकड़ मँगावे वाकी फिरत दुहाई
छाँड़ो

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
धा	धिं	धिं	धा	धा	धिं	धिं	धा	धा	तिं	तिं	ता	ता	धिं	धिं	धा
×				2				0				3			
स्थायी															
						[नि]सा	नि	सा	रे	रे	(ग)	–	म	–	म
						छाँ	ड़ो	छाँ	ड़ो	छै	ला	ऽ	मो	ऽ	रि
प	–	प	म	प	ध	नि	सा	नि	धप	म	प	(ग)	–	रे	–
बैं	ऽ	याँ	दु	ख	त	मो	रि	न	रऽ	म	क	ला	ऽ	ई	ऽ
[सा]रे	नि	ध	नि	प	ध	[ध]म	प	[प]ग	म	प	[ध]ग	म	म	सा	नि
कै	से	तु	म	कै	से	तु	म	नि	ड	र	ला	ऽ	ल	म	ग
सा	ग	रे	म	ग	रे	सा	नि								
रो	क	त	प	रा	ई,	छाँ	ड़ो								
अंतरा															
[ग]म	म	म	प	[सां]नि	नि	सां	–सां	[गं]रें	रेंगं	रें	सां	रें	नि	सां	–सां
कै	से	तु	म	म	हा	रा	ऽज	आ	वऽ	त	न	तो	को	ला	ऽज
[ध]प	रें	सां	रें	[रें]नि	नि	सां	–सां	प	ध	प	नि	ध	प	सा	नि
जा	नो	ना	क	स	को	रा	ऽज	प	क	ड़	मँ	गा	वे	वा	की
सा	ग	रे	म	ग	रे	सा	नि								
फि	र	त	दु	हा	ई,	छाँ	ड़ो								

© NCERT not to be republished

काफ़ी

ताल– तीनताल **गत– मसीतखानी**

1 2 3 4	5 6 7 8	9 10 11 12	13 14 15 16
धा धिं धिं धा	धा धिं धिं धा	धा तिं तिं ता	ता धिं धिं धा
×	2	0	3
स्थायी			
		रेरे	ग रेस –रेग– मम
		दिर	दा दिर ऽदाराऽ दिर
प प प पध	पपधनि निनि मधपम म	मधपध मग रे	
दा दा रा दिर	दादा दिर दादा रा	द्दादा दा रा	
अंतरा			
		रेंरें	रेंनिं धनि पध मप
		दिर	दा दिर दा रा
ध सनिनि सं रेंगं	रें निनि ध प	मधपध मगमग रे	
दा दिर दिर दा रा	दा दिर दा रा	द्दादा दा रा	

काफ़ी

ताल– तीनताल **गत– रज़ाखानी**

1 2 3 4	5 6 7 8	9 10 11 12	13 14 15 16
धा धिं धिं धा	धा धिं धिं धा	धा तिं तिं ता	ता धिं धिं धा
×	2	0	3
स्थायी			
		स रेरे रे, ग	– म प म
		दा दिर दा, दा	ऽ दा दा रा
प – प म	ग रे स नि		
दा ऽ दा रा	दा रा दा रा		
अंतरा			
प – प म	प ध नि सं	नि धध मम धपम	ग– ग,रे –स, रे
दा ऽ दा रा	दा रा दा रा	दा दिर दिर दिर	दाऽ र,दा ऽर, दा
रे निनि ध नि	प धध म प	ग मम प ग	– म स नि
दा दिर दा रा	दा दिर दा रा	दा दिर दा दा	ऽ रा दा रा
स गग रे म	ग रे स नि		
दा दिर दा रा	दा रा दा रा		

© NCERT not to be republished

अभ्यास

इस राग के बारे में आप पढ़ चुके हैं। आइए, नीचे लिखे प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास करें–

1. राग काफी किस थाट के अंतर्गत आता है?
2. राग काफी पर आधारित होरी गाने वाले कलाकारों से बातचीत करके या यूट्यूब आदि से अन्वेषण कर 'होरी' के शब्दों और स्वर समूह पर विचार करें।
3. क्या राग काफी में दोनों निषाद का प्रयोग होता है?
4. राग काफी में किस प्रकार की शैलियों की रचनाएँ गाई जाती हैं?
5. राग काफी पर आधारित कोई दो फिल्मी गीत लिखिए तथा उस गीत के कलाकारों के बारे में भी लिखिए।
6. राग काफी पर आधारित कोई एक श्लोक लिखिए तथा राग के मुख्य लक्षण बताइए।
7. राग काफी पर आधारित कोई एक बंदिश की स्वरलिपि लिखिए।
8. किन्हीं दो प्रसिद्ध गीतकार और संगीतकारों का योगदान बताइए जिन्होंने राग 'काफी' में कुछ रचनाएँ बनाई हों।

सही या गलत बताइए–

1. राग काफी आश्रय राग की श्रेणी में नहीं आता है। (सही/गलत)
2. इसके आरोह में निषाद वर्जित स्वर होता है। (सही/गलत)
3. इस राग की जाति षाड्व संपूर्ण होती है। (सही/गलत)
4. इसके आरोह तथा अवरोह में क्रमशः शुद्ध व कोमल गंधार प्रयोग होता है। (सही/गलत)

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. राग काफी का वादी ..... तथा संवादी ..... होता है।
2. राग काफी की जाति ..... होती है।
3. इस राग को गाने का समय ..... है।
4. इसका पकड़ स स ..... ग॒ ग॒ म म ..... हैं।
5. इस राग में ....., दादरा, ..., गाई जाती है।

© NCERT not to be republished

सुमेलित कीजिए–

अ	आ
1. राग काफी का थाट	(क) मध्य रात्रि
2. कोमल स्वर	(ख) सा रे ग॒ म प ध नि॒ सां
3. गायन समय	(ग) कदर पिया नैया
4. आरोह	(घ) ग॒ नि॒
5. अवरोह	(ङ) काफी
6. बंदिश के बोल	(च) सां नि॒ ध प म ग॒ रे सा

आइए, पाठ्यक्रम से हटकर कुछ भिन्न बातों पर भी चर्चा करें–

1. सुप्रसिद्ध कलाकार गिरिजा देवी एवं सिद्धेश्वरी देवी की राग काफी पर गाई हुई रचनाएँ सुनकर परियोजना बनाइए।
2. उक्त रचनाओं में अधिकांशत: किस तरह के स्वर समूह, ताल इत्यादि का प्रयोग किया गया है।

© NCERT not to be republished

राग शुद्ध सारंग

दो मध्यम अरू शुद्ध स्वर, गावत शुद्ध सारंग।
रिप संवाद औड्‌व-षाड्‌व, मध्याह्न काल आनंद।।

—चंद्रिकासार

राग विवरण

इस राग को कल्याण थाटजन्य माना जाता है। इसमें ऋषभ वादी और पंचम संवादी लगते हैं। गायन समय मध्याह्न काल है। आरोह में ग-ध और अवरोह में केवल गांधार वर्ज्य होने से इसकी जाति औड्‌व-षाड्‌व है। दोनों मध्यम और शेष स्वर शुद्ध प्रयोग किए जाते हैं। इसके आरोह में तीव्र और अवरोह में शुद्ध म प्रयोग किया जाता है। कभी-कभी दोनों मध्यम एक साथ प्रयोग करते हैं, जैसे— रे म॑ म रे, सा ऩि। आरोह में ऋषभ पर शुद्ध मध्यम का कण लेकर तीव्र मध्यम पर जाते हैं। उदाहरणार्थ आरोह देखिए। यह गंभीर प्रकृति का राग है। इसका चलन विशेषकर मंद्र और मध्य सप्तकों में होता है। स्वयं नाम से स्पष्ट है कि यह सारंग का एक प्रकार है।

मुख्य बिंदु

थाट — कल्याण
जाति — औड्‌व-षाड्‌व
स्वर — दोनों मध्यम तथा शेष स्वर शुद्ध
वादी — ऋषभ
संवादी — पंचम
समय — मध्याह्न काल
आरोह — ऩि सा,म रे, म॑ प, नि सां
अवरोह — सां नि, ध प, म॑ प, म रे, ऩि सा
पकड़ — मरे, म॑ प, म रे, सा, ऩि ध़ सा ऩि रे सा
स्वर विस्तार — ऩि सा, रे म॑ प ऽ ऽ ऽ म॑ प, (प) रे म रे म॑ ऽ म॑ प, म॑ प ध म॑ प, रे म॑ प ध ध प, ध प म॑ प, मरे सा। प ^म^रे म॑ प, म॑ प नि ऽ ध प म रे ऽ म॑ प, ऩि ध़ सा ऩि रे सा, रे म॑ प नि ऽ ध प, ध ध प म॑ प, रे म रे, म॑ प नि सं, ऽ ऽ रें सां, सां नि सां, रे मं रें सां, नि सां, नि ध सां नि रें सां, सां नि ध प, रे म॑ प नि सां नि ध प, म रे म॑ प, मरे, सा ध़ प़ म़॑ प़ ऩि सा।

© NCERT not to be republished

राग-शुद्ध सारंग (रचनाकार– उ० वासिफुद्दीन डागर)

शब्द

ताल— चौताल

गायन शैली— ध्रुपद

स्थायी— आज तो बधाई भई, भवन-भवन बाज रही, महाराजा दशरथ घर प्रगटे सुखधाम धाम

अंतरा— रनवासी अति आनंद निरख बदन अवध चंद्र पुनि-पुनि उड़ी लावत सुख पावत सब धाम

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
धा	धा	दिं	ता	किट	धा	दिं	ता	तिट	कत	गदि	गन
×		0		2		0		3		4	
स्थायी											
						म रे	म रे	रे	नी	सा	सा
						आ	ऽ	ज	तो	ऽ	ब
नी	नी	ध प	रे म	रे	सा	नी	नी	सा	म	रे	रे
धा	ऽ	ई	भ	ऽ	ई	भ	व	न	भ	व	न
मं	मं	मं	मं	प	प	म रे	मं	–	पनी	ध	प
बा	ऽ	ज	र	ऽ	ही	म	हा	ऽ	राऽ	ऽ	ज
मं	प	मं	प	रे म	रे	नी	सा	रे म	रे	मं	प
द	श	र	थ	घ	र	प्र	ग	टे	ऽ	सु	ख
रे म	रे	रे	नी	सा	सा						
धा	ऽ	म	धा	ऽ	म						
अंतरा											
						म रे	मं	प	नी	–	स
						र	न	ऽ	बा	ऽ	सी
नी	सां	सां	सां	–	सां	प	नी	सां	मं	रे	रे
अ	ति	आ	नं	ऽ	द	नि	र	ख	ब	द	न
नी	नी	सां	नी	ध प	प	रे	मं	प	नी	सांनी	रें
अ	व	ध	चं	ऽ	द्र	पु	नि	पु	नि	उऽ	ड़ि
सां	नी	ध प	मंप	रे म	रे	नी	सा	रे म	रे	मं	मंप
ला	ऽ	ऽ	ऽऽ	व	त	सु	ख	पा	ऽ	व	त
म	रे	रे	नी	सा	सा						
स	ऽ	ब	धा	ऽ	म						

© NCERT not to be republished

राग शुद्ध सारंग

शब्द

ताल— विलंबित एकताल
गायन शैली— बड़ा ख्याल

स्थायी— तुम तो बड़े बिरागी हम तो निपट अनाड़ी ग्वालिन श्याम रूप अनुरागी

अंतरा— जेहिं उन सन होवे नैनो से नैना तेंहि मग्न हिया में तीर लागी

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
धिं	धिं	धागे	तिरकिट	तू	ना	क	त्ता	धागे	तिरकिट	धी	ना
×		0		2		0		3		4	
स्थायी											
म	रे	नि़	स	नि़स	मरे	रेंम	प	नि़स	मरे	रेंम	मंप
रा	ऽ	गी	ऽ	हम	तोऽ	निप	ट	तुम	तोऽ	बड़े	ऽबि
नि	सं	ध	प	मंप	मरे	नि़	स	धप	मंप	मरे	रेंमंपनि
श्या	म	रू	प	अनु	राऽ	गी	ऽ	अऽ	नाऽ	ड़ीऽ	ग्वाऽलिन
अंतरा											
सां	सां	नि	सां	निसां	रें	रें	निसं	रेंम	पनि	सं	नि
न	ऽ	हो	वे	नैऽ	नो	से	नैना	जेहिं	ऽन	ऽ	स
नि	सां	ध	प	मं	प	मरे	नि़	निस	धप	रेंम	प
हि	या	में	ऽ	ती	र	लाऽ	गीऽ	तेंऽ	हिऽ	मग	न

© NCERT not to be republished

राग शुद्ध सारंग

शब्द

ताल— तीनताल

गायन शैली— छोटा ख्याल

स्थायी— अब मोरी बात मान ले पिहरवा जाऊँ मैं तोपे वारी-वारी-वारी

अंतरा— प्रेम पिया हम से नहीं बोलत बिनति करत मैं तो हारी-हारी-हारी

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
धा	धिं	धिं	धा	धा	धिं	धिं	धा	धा	तिं	तिं	ता	ता	धिं	धिं	धा
×				2				0				3			
स्थायी															
											म	रे	सनि़	–	स
											अ	ब	मो	ऽ	री
नि़	–	प़	–	नि़	ध़	स	नि़	रे	स	–	रे	मैं	प	नि	सं
बा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	त	ऽ	रे	न	ले	ऽ	पि
नि	–	–	प	–	–	मं	(प)	म	रे	–	रे	मैं	प	नि	सं
ह	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र	वा	ऽ	ऽ	जा	ऊँ	मैं	तो	पे
पनि	सरें	सं	प–	ध–	प	रे	म	रे	नि़	स	म				
वाऽ	ऽऽ	रि	वाऽ	ऽऽ	रि	वा	ऽ	रि	वा	रि	अ				
अंतरा															
								प	–	प	नी	सं	–	सं	सं
								प्रे	ऽ	म	पि	या	ऽ	ह	म
मंरें	मं	रें	सं	सं	(सं)	नि	नि	प	नि	सं	रें	सं	निध	मं	प
से	ऽ	न	हि	बो	ऽ	ल	त	बि	न	ति	क	र	तऽ	मैं	तो
पनि	सं	रें	संसं	ध	प	रे	म	रे	नि़	स	म				
हाऽ	ऽ	री	हाऽ	ऽ	री	हा	ऽ	री	हा	री	अ				

© NCERT not to be republished

राग शुद्ध सारंग

ताल— त्रिताल

गायन शैली— छोटा ख्याल

शब्द

स्थायी— मान-मान हमरी कहि बतियाँ मोहन रसिया तुम
बिन तरसत मीन सलिल बिन गोकुल सखियाँ

अंतरा— अति कठोर चित नंद कुंवारो कछु ना कहत है
कोमल मनवा खेलन खेलो ऐसो सुन्दरवा

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
धा	धिं	धिं	धा	धा	धिं	धिं	धा	धा	तिं	तिं	ता	ता	धिं	धिं	धा
×				2				0				3			
स्थायी															
रेम॑	पध	म॑प	म	रे	रे	ऩि	सा	ऩि	ऩि	ध़	प़	ऩि	ऩि	सा	सा
माऽ	ऽऽ	नऽ	मा	ऽ	न	ह	म	री	ऽ	क	हि	ब	ति	याँ	ऽ
ऩि	सा	म	रे	म॑	म॑	प	प	म॑	प	ध	प	म॑	प	म	रे
मो	ऽ	ह	न	र	सि	या	ऽ	तु	म	बि	न	त	र	स	त
रे	म॑	प	नि	सां	नि	ध	प	म॑	प	ध	प	म	रे	ऩि	सा
मी	ऽ	न	स	ली	ल	बि	न	गो	ऽ	कु	ल	स	खि	याँ	ऽ
अंतरा															
रे	रे	म॑	म॑	प	प	नि	नि	सां	सां	सां	सां	नि	रे	सां	सां
अ	ति	क	ठो	ऽ	र	चि	त	नं	ऽ	द	कुँ	वा	ऽ	रो	ऽ
नि	सां	रे	मं	रें	रें	सां	सां	सां	सां	नि	ध	म॑	प	म	रे
क	छु	ना	क	ह	त	है	ऽ	को	ऽ	म	ल	म	न	वा	ऽ
रे	म॑	पा	नि	सां	नि	ध	प	म॑	प	ध	प	म	रे	ऩि	सा
खे	ऽ	ल	न	खे	ऽ	लो	ऽ	ऐ	ऽ	सो	सुं	द	र	वा	ऽ

© NCERT not to be republished

शुद्ध सारंग

ताल– तीनताल **गत– मसीतखानी**

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
धा ×	धिं	धिं	धा	धा 2	धिं	धिं	धा	धा 0	तिं	तिं	ता	ता 3	धिं	धिं	धा
							स्थायी								
											रेम॑प दिर	मरे दा	सस दिर	नि़ दा	स रा
नि़ दा	नि़ध़ दा	प़ रा	नि़नि़ दिर	स दा	रेरे दिर	म॑ दा	प रा	रेम दा	रे दा	स रा					
							मान्झा								
म॑ दा	प़प़ दिर	नि़ दा	स रा	^म^रे दा	म॑म॑ दिर	प दा	म रा	रेमरे दा	नि़ दा	स रा					
							अंतरा								
											म॑प दिर	मरे दा	म॑म॑ दिर	प दा	नि रा
सं दा	सं दा	सं रा	निनि दिर	सं दा	रेंरें दिर	मं॑ दा	पं रा	रेंमं दा	मंरें दा	सं रा					
											रेंमं दिर	रें दा	संसं दिर	नि दा	सं रा
नि दा	ध दा	प रा	म॑प दिर	^म^रे दा	म॑म॑ दिर	प दा	म॑ रा	रेम दा	रे दा	स रा					

© NCERT not to be republished

शुद्ध सारंग

ताल— तीनताल **गत— रज़ाखानी**

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
धा	धिं	धिं	धा	धा	धिं	धिं	धा	धा	तिं	तिं	ता	ता	धिं	धिं	धा
×				2				0				3			
स्थायी															
						रेरे	मम	रे–	रे,स	–स,	रेरे	नि़	सस	रे	मं
						दिर	दिर	दाऽ	र,दा	ऽर,	दिर	दा	दिर	दा	रा
प	–	–,	रे	म	रे										
दा	ऽ	र,	दा	ऽ	रा										
अंतरा															
प	–	–,	रे	–	मं	प	नि	सं	रेरें	निनि	संसं	नि–	नि,ध	–ध,	प
दा	ऽ	र,	दा	ऽ	रा	दा	रा	दा	दिर	दिर	दिर	दाऽ	र,दा	ऽर,	दा
रे	मम	प	सं	–	नि	ध	प	मं	प	रेरे	मम	रे–	रे,नि	–नि,	स
दा	दिर	दा	रा	ऽ	दा	दा	रा	दा	रा	दिर	दिर	दाऽ	र,दा	ऽर,	दा
रे	मम	प,	रे	म	रे										
दा	दिर	दा,	दा	ऽ	रा										

अभ्यास

इस राग के बारे में आप पढ़ चुके हैं। आइए, नीचे लिखे प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास करें–

1. राग शुद्ध सारंग किस थाट के अंतर्गत आता है?
2. राग शुद्ध सारंग का गायन समय बताइए।
3. क्या राग शुद्ध सारंग के आरोह में 'शुद्ध म' का प्रयोग होता है?
4. राग शुद्ध सारंग में मध्यम के प्रयोग का विवेचनात्मक लेख लिखिए।
5. छह पंक्तियों में राग शुद्ध सारंग का आलाप लिखिए।
6. राग शुद्ध सारंग पर आधारित कोई एक श्लोक लिखिए तथा राग के मुख्य लक्षण बताइए।
7. राग शुद्ध सारंग पर आधारित किसी एक बंदिश की स्वरलिपि लिखिए।
8. इस राग में पाँच तानें लिखिए।

© NCERT not to be republished

सही या गलत बताइए–

1. राग शुद्ध सारंग आश्रय राग की श्रेणी में नहीं आता है। (सही/गलत)
2. इसके आरोह में पंचम वर्जित स्वर होता है। (सही/गलत)
3. इस राग की जाति षाड्व संपूर्ण होती है। (सही/गलत)
4. इस राग का गायन समय दिन का तीसरा प्रहर है। (सही/गलत)
5. इसके आरोह तथा अवरोह में क्रमशः शुद्ध व कोमल गंधार का प्रयोग होता है। (सही/गलत)

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. राग शुद्ध सारंग का वादी ..... तथा संवादी ..... होता है।
2. राग शुद्ध सारंग की जाति ..... होती है।
3. नि़ स रे ..... प मं प ..... रे म रे ..... स।
4. रे मं ..... म रे मं प ..... ध प मं प नि .....
5. राग शुद्ध सारंग का पकड़ ..... है।

सुमेलित कीजिए–

अ	आ
1. राग शुद्ध सारंग का थाट	(क) मध्याह्न
2. मध्यम स्वर	(ख) नि स म रे मं प ध नि सां
3. गायन समय	(ग) शुद्ध एवं तीव्र
4. आरोह	(घ) रे ग ध नि
5. अवरोह	(ङ) कल्याण
6. वादी	(च) सां नि ध प मं प म रे नि़ स

आइए, पाठ्यक्रम से हटकर कुछ भिन्न बातों पर भी चर्चा करें–

1. यूट्यूब या किसी अन्य माध्यम से राग 'शुद्ध सारंग' में बजाए गए विभिन्न कलाकारों का वादन सुनें। उन कलाकारों द्वारा बजाए गए स्वर समूहों को पहचानें तथा उन्हें गाएँ एवं लिखें।

© NCERT not to be republished